पद्मिनी एकादशी कथा — चयनित पूर्ण पुनर्कथन

Padmini Ekadashi Katha — Complete Selected Retelling

Source: Vrataraja — 1897 Khemraj complete Padmini account, physical scans 472–477. Also compared: Vrataraja — catalogued 1884 complete comparison, physical scans 577–584; Controlling scan metadata — CC0 digitisation and edition identity; Controlling Padmini opening image.

Valkala's own retelling of the katha in Vrataraja, 1897 Khemraj Sanskrit print, Adhik Shukla Ekadashi account 1–84, physical scans 472–477, not a transcription of the original text.

पद्मिनी का नाम और आरंभिक विधि

KATHA 1–19

युधिष्ठिर जनार्दन से अधिक मास की एकादशी का नाम और विधि पूछते हैं। कृष्ण उसे पद्मिनी कहते हैं और पद्मनाभ के लोक तथा भुक्ति-मुक्ति का धार्मिक फल बताते हैं। वे नारद को पहले कही गई विधि का उल्लेख करते हैं। युधिष्ठिर के फिर पूछने पर दशमी से आरंभ होने वाली पुरानी आचार-चर्चा आती है। स्रोत कुछ खाद्य पदार्थों और कांस्य पात्र का त्याग, सादा भोजन, संयम और भूमि पर सोना कहता है। ये इस संस्करण की बातें हैं, सबके लिए आहार या सोने का निर्देश नहीं।

एकादशी की सुबह शौच, मुख-शुद्धि और तीर्थ-स्नान का वर्णन है। मिट्टी, गोमय, तिल, दर्भ और आँवले का उल्लेख आता है। वराह, भूमि की पवित्रता, धात्री और विष्णु को संबोधित प्रार्थनाएँ स्नान के प्रसंग में हैं। कथा जलाशय में गंगा आदि तीर्थों का स्मरण, स्वच्छ अखंड वस्त्र, संध्या और पितृ-देव तर्पण के बाद हरि-मंदिर में पूजा की ओर बढ़ती है। यहाँ मंत्रों का स्वतंत्र पाठ, गोमय का उपयोग या जल में उतरने की विधि नहीं दी जाती; यह पुराने अनुष्ठान का संदर्भ है।

Yudhishthira asks Janardana about the additional month's Ekadashi and its observance. Krishna names Padmini and praises reaching Padmanabha's abode, worldly enjoyment and liberation as religious benefits. He mentions instructions previously given to Narada. Asked again, he describes preparations beginning on Dashami: restrictions on certain foods and bell-metal vessels, simple food, restraint and sleeping on the ground. These belong to the selected edition, not universal dietary or sleeping instructions.

The Ekadashi morning discussion concerns bodily and mouth cleansing and bathing at a sacred place. Earth, gomaya, sesame, darbha and amalaki appear. Prayers address Varaha, the earth's purity, Dhatri and Vishnu in the bathing setting. The account continues with recalling Ganga and other sacred waters, clean unbroken clothing, sandhya and offerings to ancestors and deities before worship in Hari's temple. No detached formula, gomaya-handling procedure or water-entry method is supplied here; this is historical ritual context.

पूजा, जागरण और धार्मिक प्रशंसा

KATHA 20–40

स्रोत राधिका सहित हरि और पार्वती सहित शंभु की प्रतिमाओं की पूजा कहता है। धान्य पर कलश, उसके ऊपर पात्र और देव-प्रतिमा, स्नान, चंदन, सुगंध, फूल, नैवेद्य और नीराजन का वर्णन आता है। सोना, ताँबा, मिट्टी और चाँदी जैसे पदार्थ इस पुराने विधान में हैं, खरीदारी की अनिवार्यता नहीं। गीत और नृत्य के साथ आराधना कही जाती है। इसके साथ कुछ लोगों से बातचीत या स्पर्श रोकने और रजस्वला स्त्री को न छूने जैसी ऐतिहासिक पाबंदियाँ भी छपी हैं। यह पुनर्कथन उन बहिष्कारों को स्वीकार नहीं करता; जाति, विश्वास या मासिक धर्म से किसी का सम्मान कम नहीं होता।

विष्णु की कथा सुनने, निर्जल रहने अथवा जल या दूध लेने और रात में जागने का उल्लेख है। चार प्रहरों में विष्णु और शिव की पूजा तथा नारियल, श्रीफल, बीजपूर और पूग-नारंगी जैसे अर्घ्य-द्रव्य बताए गए हैं। प्रत्येक प्रहर की प्रशंसा अग्निष्टोम, वाजपेय, अश्वमेध और राजसूय से की जाती है। यह सामग्री या प्रहरों की व्यावहारिक सूची नहीं; यहाँ निर्जल व्रत, नींद की कमी या रात भर जलता दीपक निर्धारित नहीं है।

सुबह के स्नान और पूजा के बाद ब्राह्मणों को भोजन तथा कलश और प्रतिमा देने की चर्चा आती है। कृष्ण इसे भुक्ति-मुक्ति देने वाला व्रत कहते हैं और पद्मिनी के पालन की धार्मिक प्रशंसा करते हैं। ये फल स्रोत के विश्वास हैं, खर्च, उपवास या दान करने पर परिणाम की गारंटी नहीं।

The source describes worshipping Hari with Radhika and Shambhu with Parvati. It discusses a vessel on grain, a further receptacle and divine image, bathing, sandalwood, fragrance, flowers, food offerings and lamp worship. Gold, copper, clay and silver are historical ritual materials, not compulsory purchases. Singing and dancing accompany devotion. The print also contains restrictions on conversation or contact with certain people and menstruating women. This retelling rejects those exclusions: caste, belief and menstruation do not diminish anyone's dignity.

Hearing Vishnu's sacred account, going without water or taking water or milk, and remaining awake at night are mentioned. Four night watches involve Vishnu and Shiva worship and offerings named as coconut, shriphala, bijapura, puga and naranga. Their benefits are compared successively with Agnishtoma, Vajapeya, Ashvamedha and Rajasuya sacrifices. This is not a practical materials or timing checklist; no waterless fast, sleep deprivation or overnight burning lamp is prescribed.

Morning bathing and worship are followed by feeding Brahmins and giving the vessel and image. Krishna praises the vow's enjoyment and liberation and devoted observance of Padmini. These are the source's religious beliefs, not guarantees obtained by spending, fasting or giving gifts.

पुलस्त्य की कथा और अनसूया की बात

KATHA 41–61

कृष्ण अब पुलस्त्य द्वारा नारद को कही कथा सुनाते हैं। कार्तवीर्य ने रावण को बंदी बनाया था; पुलस्त्य राजा से अनुरोध करके उसे छुड़ाते हैं। नारद पूछते हैं कि देवताओं और इंद्र को जीतने वाला रावण कार्तवीर्य से कैसे हार गया। पुलस्त्य उत्तर में कार्तवीर्य के जन्म का प्रसंग कहते हैं।

त्रेतायुग में माहिष्मती के हैहय राजा कृतवीर्य की हजार प्रिय रानियाँ थीं, लेकिन राज्य सँभालने वाला पुत्र नहीं था। पूजा और अन्य प्रयासों के बाद भी पुत्र न मिलने से राजा संतुष्ट नहीं थे। यह उनकी इच्छा और राजवंश की कथा है, पुत्री या संतानहीन परिवार का मूल्यांकन नहीं। राजा मंत्री को शासन देकर तप के लिए निकलते हैं। हरिश्चंद्र की बेटी और उनकी पत्नी पद्मिनी आभूषण छोड़कर उनके साथ गंधमादन जाती हैं। स्रोत दस हजार वर्षों की तपस्या और राजा की बहुत क्षीण देह कहता है; यह पौराणिक अवधि है, तप से शरीर को नुकसान पहुँचाने की सलाह नहीं।

पद्मिनी अनसूया से पूछती हैं कि कौन-सा व्रत भगवान को प्रसन्न करके उनकी संतान की इच्छा पूरी करेगा। अनसूया अतिरिक्त मास और पद्मिनी-परमा की जोड़ी का उल्लेख करती हैं। छपा संवाद द्वादशी-युग्म शब्द भी रखता है और मास के आने की बत्तीस-मास वाली अवधि कहता है। इन्हें यहाँ आधुनिक कैलेंडर-गणना या एकादशी का नाम बदलने का आधार नहीं बनाया गया। अनसूया व्रत और जागरण की धार्मिक प्रशंसा करती हैं।

Krishna now relates an account told by Pulastya to Narada. Kartavirya had imprisoned Ravana, whom Pulastya secured by petitioning the king. Narada asks how Ravana, conqueror of the gods including Indra, could lose to Kartavirya. Pulastya answers with Kartavirya's birth.

In the Treta age, Haihaya king Kritavirya of Mahishmati had a thousand beloved wives but no son to inherit the kingdom. Despite worship and other efforts he remained dissatisfied. This is his dynastic desire, not a judgment of daughters or childless families. Leaving government with his minister, he departs for austerities. His wife Padmini, Harishchandra's daughter, leaves her ornaments and accompanies him to Gandhamadana. The source gives ten thousand years of austerity and an extremely wasted body; this is mythic duration, not advice to damage one's health.

Padmini asks Anasuya which observance could please the Lord and fulfil her wish for a child. Anasuya describes the additional month and the pair Padmini and Parama. The printed dialogue also uses Dwadashi-yugma and mentions a thirty-two-month interval. Neither is used here to calculate a modern calendar or rename Ekadashi. Anasuya praises the vow and vigil in religious terms.

पद्मिनी की आराधना और कार्तवीर्य का जन्म

KATHA 62–78

अनसूया पहले कही विधि विस्तार से बताती हैं। पद्मिनी संतान की इच्छा से उसका पालन करती हैं। कथा उनके निराहार-निर्जल रहने और गीत-नृत्य सहित जागरण का वर्णन करती है। यह उनकी कथा है, पाठक पर ऐसी तपस्या का दायित्व नहीं। व्रत पूरा होने पर गरुड़ पर आरूढ़ केशव प्रकट होकर वर माँगने को कहते हैं। पद्मिनी स्तुति करके अपने पति को वर देने की प्रार्थना करती हैं।

जनार्दन अतिरिक्त मास और उसमें की एकादशी की प्रशंसा करते हैं। वे राजा को इच्छित वर माँगने देते हैं और कहते हैं कि उनकी पत्नी ने उन्हें प्रसन्न किया है। कृतवीर्य ऐसे पराक्रमी पुत्र का वर माँगते हैं जिसे देव, मनुष्य, नाग, दैत्य, दानव और राक्षस न जीत सकें, केवल भगवान को छोड़कर। विष्णु स्वीकार करके अंतर्धान होते हैं। प्रसन्न राजा पत्नी के साथ अपने नगर लौटते हैं।

पद्मिनी से बलवान कार्तवीर्य जन्म लेते हैं। पुलस्त्य कहते हैं कि इसी वर और पद्मिनी के व्रत के प्रसंग से रावण की पराजय समझी जाती है; नारायण को छोड़कर कोई उन्हें जीत नहीं सकता था। यह कथा का अलौकिक शक्ति-वर्णन है, युद्ध-विजय या संतान प्राप्ति की वास्तविक गारंटी नहीं।

Anasuya explains the earlier observance in detail. Hoping for a child, Padmini follows it. Her abstention from food and water and vigil with singing and dancing belong to the narrative, not a duty imposed on readers. When the observance ends, Keshava appears mounted on Garuda and invites a boon. After praising him, she asks that her husband receive it.

Janardana praises the additional month and its Ekadashi. Saying her devotion has pleased him, he invites the king's request. Kritavirya asks for a mighty son whom gods, humans, Nagas, Daityas, Danavas and Rakshasas cannot defeat, except the Lord himself. Vishnu agrees and disappears. The happy king returns to his city with his wife.

Padmini bears powerful Kartavirya. Pulastya explains that this boon and the Padmini observance account for Ravana's defeat: no one except Narayana could overcome Kartavirya. These are supernatural narrative claims, not actual guarantees of military victory or having children.

युधिष्ठिर, सूत और पूरा समापन

KATHA 79–84

पुलस्त्य प्रसन्न होकर चले जाते हैं। कृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं कि अतिरिक्त मास की शुक्ल एकादशी का पूरा प्रसंग उन्होंने बताया है। वे हरि के लोक की धार्मिक प्रशंसा करके राजा को पालन की बात कहते हैं। युधिष्ठिर प्रसन्न होकर परिवार के साथ व्रत करते हैं।

सूत भी प्रश्न करने वाले द्विज को संबोधित करके कहते हैं कि पूरा प्रसंग कहा गया है और पूछते हैं कि आगे क्या सुनना चाहते हैं। अंतिम दो छंद अतिरिक्त मास की शुक्ल एकादशी करने तथा उसकी पूरी विधि और कथा सुनने-पढ़ने की प्रशंसा करते हैं। आध्यात्मिक फल परंपरागत विश्वास हैं, किसी के जीवन या मुक्ति का निर्णय नहीं। पद्मिनी की कथा का अपना समापन यहीं है। इसके बाद अलग अधिक-मास कृष्ण एकादशी कथा शुरू होती है; उसे इस प्रसंग में नहीं मिलाया गया।

Pulastya departs contentedly. Krishna tells Yudhishthira that he has related the whole additional month's bright-fortnight observance. Praising Hari's abode in religious terms, he commends it to the king. Yudhishthira gladly observes it with his family.

Suta likewise tells the questioning Brahmin that the whole account has been given and asks what he wishes to hear next. The final two stanzas praise observing this bright Ekadashi and hearing or reading its complete instructions and account. Spiritual benefits are traditional beliefs, not judgments about anyone's life or liberation. The selected Padmini account closes with its own colophon. A separately headed Adhik Krishna Ekadashi account follows and is not blended into this one.